1

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

परमेश्वर के निर्देशों को मानने से

विवाह से सुन्दर कोई बात नहीं है: दूल्हा बहुत सुन्दर लग रहा होता है और दुल्हन तो इतनी सुन्दर दिखती है, जैसे पहले कभी नहीं दिखी। सुन्दर फूलों से चर्च बिल्डिंग या वह स्थान जहां शादी होनी होती है, खूब सजी होती है। गानों में भी प्रेम की भाषा होती है और सेवक विवाह के नियम और व्यवस्था के बारे में बताता है, जो परमेश्वर की ओर से ठहराई गई है। दूल्हा और दुल्हन शपथ लेते हैं और यह वायदा करते हैं कि एक-दूसरे से प्रेम करेंगे और एक-दूसरे का सम्मान करेंगे ''जब तक मृत्यु हमें अलग न करे।'' निकाह की रस्म के बाद दूल्हा-दुल्हन को बधाई दी जाती है, और फिर विवाहित दम्पत्ति, ''खुशी-खुशी रहने लगता है।'' ठीक कहा? कभी-कभार यह गलत भी साबित हो जाता है!

निकाह के समय किए गए वायदे तो यही दिखाते हैं कि विवाह तभी समाप्त होगा, जब पति या पत्नी दोनों में से किसी की मृत्यु होगी। पर अमेरिका में आधे से अधिक विवाह तलाक के साथ समाप्त होते हैं। कुछ राज्यों में तो विवाह से तलाक अधिक होते हैं। आजकल कुछ अजीब सा लगता है, कि जब आप किसी से बहुत दिनों के बाद मिलते हैं और पूछते हैं, ''तुम्हारे पति या तुम्हारी पत्नी का क्या हाल है?'' और वह व्यक्ति ऐसे उत्तर देता है, ''क्या, तुम मेरी भूतपूर्व पत्नी (या मेरे पति) के बारे में पूछ रहे हो?''

समस्या कहां है? जब विवाह के सारे सुन्दर सपने तलाक की अदालत में टूट जाते हैं तो कमी कहां रह गई? अधिक आवश्यकता है कि क्या किया जाए कि ऐसा अन्त होने से इस रिश्ते को बचाया जा सके? जब आपका विवाह होता है तो आप तलाक की समस्या को कैसे दूर रख सकते हैं?

सच तो यह है कि ऐसे दर्दनाक अन्त से बचने के लिए कुछ निर्देशों का पालन करना आवश्यक है। सफ़र करते वक्त भटकने से बचने के लिए यह ज़रूरी है कि आप जिस जगह जा रहे हैं उसके बारे में पूरा ज्ञान प्राप्त कर लें। आपको ठीक-ठीक निर्देश लेकर उनका पालन करना होगा। अगर डॉक्टर आप को कोई दवा लिखकर देता है तो आवश्यक है कि आप दवा डॉक्टर की सलाह से ही लें, वरना परिणाम गम्भीर हो सकते हैं। उसी प्रकार अगर आप चाहते हैं कि आपका विवाहित जीवन सफल रहे तो आपको निर्देशों को मानना होगा।

आपको सही निर्देश कौन दे सकता है? कई सम्भावनाओं पर विचार किया जा सकता है।

आपके माता-पिता, नहीं ...

आप बिल्कुल वैसे ही रहने की कोशिश करते हैं जैसे आप बचपन से अपने माता-पिता के साथ रहते थे। लोग ऐसा ही करते हैं। लड़के अधिकतर अपने पिता की तरह ही पति और पिता बन जाते हैं। लड़कियां वैसे ही पत्नी और मां बन जाती हैं, जैसी उनकी मां रही है।

कई बार इसका परिणाम अच्छा वैवाहिक जीवन होता है क्योंकि परिवारों में लम्बे वैवाहिक रिश्ते चल रहे होते हैं। उदाहरण के लिए मेरे माता-पिता की शादी को उन्नहत्तर वर्ष हो गए थे, जब 2003 में मेरी मां का देहांत हुआ। तब वह अट्ठासी वर्ष की थीं। मेरी पत्नी के माता-पिता की शादी को पचास वर्ष हो गए थे, जब 1985 में उसके पिता का देहांत हुआ। मेरे भाई और भाभी ने अपनी पचासवीं वर्षगांठ 2004 में मनाई, जबकि मैंने और मेरी पत्नी ने वह ''सुनहरा'' दिन 2008 में मनाया। क्या ये तथ्य संयोग हैं ? लगता नहीं। इससे तो यही पता चलता है कि मेरे भाई और मेरे वैवाहिक जीवन की सफलता के पीछे एक कारण यह है कि हमारे माता-पिता और हमारी पत्नियों के माता-पिता के वैवाहिक जीवन हमारे लिए उदाहरण रहे हैं यानी जाने-अनजाने में जो हम ने उनसे सीखा है।

कई बार जब आप अपने माता-पिता के तरीके और उदाहरण अपने वैवाहिक जीवन में भी अपनाते हैं तो कई कारणों से कठिनाइयां आ सकती हैं (1) आपको सफल वैवाहिक जीवन जीने वाले माता-पिता न मिले हों तो आप उनसे सफल वैवाहिक जीवन जीने के गुण कहां से सीखेंगे ? (2) *कई* बार माता-पिता या रिश्तेदारों द्वारा दी गई सलाह आपके वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के बजाय बिगाड़ देती है। (3) किसी भी विवाह में दो परिवार आपस में जुड़ते हैं। हर परिवार के अपने नियम होते हैं। अगर पति के परिवार वालों का व्यवहार और नियम पत्नी के परिवार वालों से मेल नहीं खाते और उनका आपस में टकराव रहता है तो यह नया दम्पत्ति किस परिवार के नियमों को मानेगा। हम अपने परिवार के अच्छे उदाहरण और दूसरों के अच्छे उदाहरणों के लिए धन्यवाद दे सकते हैं, लेकिन पारिवारिक निर्देशों को मानकर सफल वैवाहिक जीवन की गारंटी नहीं दी जा सकती।

समाज नहीं ...

दूसरी सम्भावना यह भी है कि समाज को बड़े ध्यान से देखकर उससे सफल वैवाहिक जीवन के लिए कुछ सुझाव एकत्रित किए जाएं। समाज में नैतिक मूल्यों के आधार पर जीवन जीने से विवाह को सफल बनाया जा सकता है। आज जबकि समाज के कुछ वर्ग ''व्यभिचार'' को नज़रअंदाज़ कर देते हैं (अविवाहित दम्पत्ति के बीच ''सहमति'' से किया सहवास)। बहुत से लोग अभी भी नहीं मानते कि ''व्यभिचार'' (अपने पति या पत्नी के साथ बेवफाई करना) गलत है। अपने पति या पत्नी के साथ वफादार रहने की ज़िम्मेदारी समझ कर आप अपने वैवाहिक जीवन को बचा सकते हैं। व्यभिचार परमेश्वर की दृष्टि में दुष्कर्म के समान ही पाप है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह मान लेना असुरक्षित ही है कि समाज की हर बात या तो परमेश्वर की ओर से है या आपके वैवाहिक जीवन के लिए लाभदायक है।

जीने के आधुनिक मानकों से सफल वैवाहिक जीवन ही मिले, जैसा कि पश्चिमी देशों में आज तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति को देखकर स्पष्ट हो रहा है। अगर समाज में 50 प्रतिशत विवाह तलाक से खत्म हो रहे हैं तो समाज के पीछे चलकर आपके वैवाहिक जीवन के सफल होने के चांस भी 50 प्रतिशत से अधिक नहीं हैं।

इसके अलावा समाज के मानदंडों पर चलकर इस बात की गारण्टी कभी नहीं दी जी जा सकती। एक दम्पत्ति का विवाह परमेश्वर को प्रसन्न कर पाएगा। उदाहरण के लिए आज तो

विवाह में यह सब चलन में है।

- कुछ लोग तो आज समलैंगिक विवाह को मान्यता देने लगे हैं।
- कई समाजों में बहु-विवाह का प्रचलन पाया जाता है।[1]
- अमेरिका में तो किसी भी कारण से तलाक, या बिना कारण के भी प्रचलित है।

इस तथ्य का कि कुछ रीतियां सांस्कृतिक तौर पर माननी पड़ती हैं, अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि मसीही लोग भी उनमें शामिल हो सकते हैं।[2] बाइबल बताती है कि मसीही लोग इस संसार के सदृश न बनें (रोमियों 12:1, 2), अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें (याकूब 1:27) और संसार से प्रेम न रखें (1 यूहन्ना 2:15-17)। अन्य शब्दों में, मसीह लोगों को संसार से अलग होना चाहिए। एक समाज शास्त्री जो अलग-अलग संस्कृति के लोगों पर शोध करता है, यह कहते हुए समाप्त कर सकता है कि सभी वैवाहिक प्रथाएं मान्य हैं, लेकिन मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के वचन पर दृढ़ता से चलना चाहिए।

व्यावसायिक नहीं ...

दूसरा माध्यम, जिसके द्वारा पति, पत्नी इकट्ठे रहना सीखते हैं, वो है बेशुमार किताबें, लेख वीडियो आदि जो पति-पत्नी को यह बताते हैं कि कैसे खुशहाल जीवन जीएं। कभी-कभी यह सामग्री भविष्य में विवाह कराने वालों को और नवविवाहितों को बहुत अच्छी सलाह देती है। कोई भी दम्पत्ति जो अपने विवाहित जीवन को जी-जान से सफल बनाना चाहता है उन्हें अच्छे शिक्षकों और व्यवसायी सलाहकारों से सीखने का कोई मौका नहीं गंवाना चाहिए बल्कि हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

फिर भी एक चेतावनी है। व्यावसायिक काउंसलर के पास कहने को अच्छी-अच्छी बातें होती हैं, पर वे एक परस्पर विरोधी हो सकती हैं। कई बार उनकी सलाह बिल्कुल मददगार साबित नहीं होती। मनोरोग चिकित्सक एक सांसारिक परम्परा में निपुण होते हैं, उन्हें विवाह के टूटने में कोई बुराई नहीं दिखती अगर पति या पत्नी को यह ''संतोषजनक'' न लगता हो। निश्चित रूप से अगर कोई चाहता है कि उसका वैवाहिक जीवन चलता रहे, उसे तलाक लेने की सलाह देने वालों से चौकस रहना आवश्यक है।

आप पूरी तरह से विवाहित जीवन पर लिखी पुस्तकों को नकार नहीं सकते, न ही आप को प्रचारक, उपदेशक या काउंसिलर की मदद लेने से इनकार करना चाहिए।[3] इस कारण न तो आप अपने माता-पिता के उदाहरण को नकार सकते हैं और न समाज के मानक को ही। हर परिस्थिति में आपके लिए आवश्यक है कि आपको जो सलाह या निर्देश मिलें, विवाह के अधिकार को ध्यान में रखते हुए उन पर विचार करें।

वह अधिकार क्या है? अगर माता-पिता समाज या व्यवसायी के पास आपके प्रश्नों का उत्तर नहीं है कि विवाह को सफल कैसे बनाएं, तो किसके पास है? विवाह के विषय पर पूरे अधिकार के साथ कौन बता सकता है कि सफल वैवाहिक जीवन कैसे हों?

... परमेश्वर!

इसका उत्तर है ''परमेश्वर''! केवल उसी के पास सफल वैवाहिक जीवन बनाने के सभी सही उत्तर हैं। हमें कम से कम इन दो अच्छे कारणों के लिए उसके दिशा-निर्देशों पर चलना चाहिए।

(1) क्योंकि वह विवाह की स्थापना करने वाला है

परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है! उसने स्त्री और पुरुष को बनाया। इसलिए वह उनकी आवश्यकताओं को जानता है। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसने विवाह की स्थापना की और उन्हें यह निर्देश दिए कि विवाहित जीवन में कैसे व्यवहार करना है। किसी चीज़ को उसके बनाने वाले से बेहतर कौन जान सकता है? अगर आप के पास कोई उपकरण है और उसमें कोई खराबी आ जाए तो आप उसे ठीक कराने के लिए किसके पास जाएंगे? उसके बनाने वाले के पास! उसी तरह अगर लोग यह जानना चाहते हैं कि विवाह को सफल कैसे बनाएं, तो उन्हें परमेश्वर के पास और उसके अधिकृत वचन के पास यह सीखने के लिए कि वह इस विषय पर क्या कहता है, जाना होगा।

(2) वह आज्ञाकारिता का प्रतिफल देता है और आज्ञा न मानने का दण्ड देता है

लोगों के लिए यह निर्देश आवश्यक है कि वे परमेश्वर द्वारा विवाह के लिए दिए गए निर्देशों को मानें क्योंकि परमेश्वर के निर्देशों को आज्ञापालन से मानने पर खुशियां मिलती हैं, इस जीवन में भी मृत्यु के बाद भी।[4] उसकी आज्ञाओं को न मानने पर परमेश्वर दण्ड देता है। उसने आज्ञा मानने वालों और न मानने वालों को जो परिणाम भुगतने पड़ेंगे, उनके बारे में, मूसा के दिनों में दी गई वाचा के बारे में बताया (देखें लैव्यव्यवस्था 26:3-39; व्यवस्थाविवरण 27:15-28 :68)। नये नियम में यीशु ने आज्ञाकारिता और आज्ञा न मानने के बीच फर्क ठीक उस प्रकार का बताया कि रेत पर घर बनाने वाले ने-उसे ढहता हुआ देखने के लिए बनाया-और चट्टान पर घर बनाने वाले ने इस विश्वास से बनाया कि यह मज़बूती से खड़ा रहेगा (देखें मत्ती 7:21-27)।

पुराने नियम के उदाहरण-पुराने नियम में पतन के कई उदाहरण मिलते हैं, जो परमेश्वर द्वारा दिए गए वैवाहिक नियमों का उल्लंघन करने पर मिला। पृथ्वी पर जल-प्रलय ''परमेश्वर के पुत्रों'' के ''मनुष्यों की पुत्रियों'' (उत्पत्ति 6:1-4) के साथ विवाह की उतावली के कारण ही आया था। इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश में आए अधिक समय नहीं हुआ था, इस्राएल के पुरुष अपने विवाह के वादों को भूल गए और उन्होंने मोआबी स्त्रियों के साथ कुकर्म किया, जिसके परिणाम में 24,000 इस्राएली महामारी से मर गए (गिनती 25:1-9)। दाऊद को भी व्यभिचार के गंभीर परिणाम भुगतने पड़े (2 शमुएल 11; 12[5])। बाल देवता की उपासना, जिसने लगभग उत्तरी इस्राएल को नष्ट कर दिया था। यह अहाब का ईजेबेल से विवाह का परिणाम था (1 राजाओं 16:29-33) जो कि उसने परमेश्वर के विदेशियों से विवाह की मनाही के बावजूद किया (देखें 34:16; व्यवस्थाविवरण 7:3, 4)। बाबुल की दासता के बाद भी अपनी जवानी की पत्नियों को छोड़कर और काफिरों से विवाह करके, जो ऐसा काम था कि यहूदी अगुओं द्वारा तुरन्त कार्रवाई न किए जाने पर विनाश की ओर ले जा सकती थी, यहूदी लोग व्यवस्था को तोड़

रहे थे (एज्रा 9:10; मलाकी 2:10-16 से तुलना करें)।

पुराना नियम उन दम्पत्तियों के भी उदाहरण देता है, जिन्हें परमेश्वर ने आशीषित किया: रूत और बोअज़ (रूत 4:13-22; मत्ती 1:5, 6) हन्ना और एल्काना (1 शमुएल 1) और नूह और उसकी पत्नी (उत्पत्ति 6-10)।

नये नियम के उदाहरण-नये नियम में व्यभिचार के परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने वालों को कठोर और सदा तक मिलने वाले दण्ड के बारे में लिखा गया है (प्रकाशितवाक्य 21:8; इब्रानियों 13:4)। इसके विपरीत उन लोगों को आशिषों का वचन दिया गया है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मान कर अपने माता-पिता की आज्ञा मानते हैं (इफिसियों 6:1-3)। मसीही पत्नियां जो परमेश्वर के निर्देशों पर चलकर अपने पति के अधीन रहती हैं उन्हें आशीष मिलेगी, जब वे अपने पतियों को मसीही बनते हुए देखेंगी (1 पतरस 3:1, 2)।

इसके अलावा नया नियम परमेश्वर के नियमों को मानने या न मानने वालों के लिए कोई दण्ड नहीं देता, सिवाए संकेत के। आज्ञा मानने वाले दम्पत्ति, जिन्होंने विवाह के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों को माना, उनकी सराहना की गई है। जकर्याह और इलीशिबा को परमेश्वर ने उनके बुढ़ापे में बेटा देकर आशीषित किया (लूका 1:5-25, 57-66)। अक्विला और प्रिसकिल्ला की उनके अच्छे कामों के लिए पौलुस द्वारा सराहना की गई (रोमियों 16:3, 4)। मरियम और यूसुफ परमेश्वर के नियमों के मानने वाले थे और उन्हें प्रभु के सांसारिक माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है (मत्ती 1:18-25)। इसी तरह जो मसीही लोग अपने विवाहित जीवन में परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों को मानते हैं। तलाक नाम की बर्बादी से बचे रहने की उम्मीद ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचनों के प्रति वफादार रहने के द्वारा आशिषें भी पाते हैं।

सारांश

10 अप्रैल 1912 को जब *टाइटैनिक* जहाज़ इंग्लैंड की साउथएम्पटन बन्दरगााह से अपने पहले सफर न्यू यॉर्क की ओर जाने के लिए निकला, तो यही माना गया था कि यह डूब नहीं सकता। सफर के दो ही दिनों में इसकी एक बर्फ के पहाड़ से टक्कर हुई और यह तीन घंटों से भी कम समय में समुद्र में समा गया, जिसमें लगभग 1,500 लोग डूब कर मर गए। जिन लोगों ने टाइटैनिक की इतनी बड़ी घटना की खुशी मनाई थी, उन्होंने इस सफर के इतने दु:खद अन्त की कल्पना भी नहीं की थी। फिर भी यह हो गया।

बहुत से दम्पत्ति जीवन का सफर यही सोचकर आरम्भ करते हैं कि उनकी शादी डूबेगी नहीं, लेकिन उन्हें यह पता नहीं होता कि जिस ''समुद्र'' को वे पार करने की कोशिश कर रहे हैं, उसमें ''बर्फ के पहाड़'' भी हैं। कई ख़तरनाक मुश्किलें विवाह को तोड़ सकती हैं, जब तक हम उनसे दूर रहने की कोशिश न करें। हर दम्पत्ति को एक अच्छे चार्ट की आवश्यकता है। ... दोनों को दिखाने के लिए कि मुश्किलें कहां हैं और उन्हें कैसे टाला जा सकता है। पति-पत्नी को ऐसा चार्ट कहां से मिल सकता है? केवल एक जगह से यानी परमेश्वर के निर्देश, जो आपदा को टालने में मदद करते हैं, उसकी किताब में मिलते हैं, यानी बाइबल से!

आप किसी की सलाह भी ले सकते हैं। किताबें भी पढ़ सकते हैं लेकिन आप अपने विवाहित जीवन की नींव एक किताब पर रखें जो सर्वशक्तिमान, जो सबसे ऊपर है, परमेश्वर

के द्वारा दी गई है, कि अपने वैवाहिक जीवन को कैसे सफल बनाएं, वह है बाइबल! अगर आप चाहते हैं कि आपका विवाह सफल हो तो पवित्र वचन को पढ़ें और मानें! परमेश्वर के वचन को अपनी अगुआई करने दें कि वह आपके वैवाहिक जीवन को सही दिशा दे।

टिप्पणियां

[1]पुराने नियम के समयों में बहुविवाह प्रचलन में तो था, पर अध्याय मत्ती 19 में यीशु के अनुसार यह विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना का भाग नहीं था। स्पष्टतया इसकी अनुमति लोगों के मनों की ''कठोरता'' के कारण पुराने नियम के युग में दी गई थी (मत्ती 19:8)। [2]उदाहरण के लिए बाइबल समलैंगिता को गलत ठहराती है (रोमियों 1:27; 1 कुरन्थियों 6:9, 10)। इसका तात्पर्य यह है कि यह बहुविवाह को भी गलत ठहराती है, क्योंकि मत्ती 19:4-6 में यीशु ने स्पष्ट किया कि पुरुष ''पत्नियों'' (बहुवचन) के बजाय अपनी ''पत्नी'' (एक वचन) के साथ मिले। [3]वास्तव में विवाह के लिए तैयारी कर रहे मसीही दम्पत्तियों को प्रचारकों, एल्डरों तथा अन्य मसीही परामर्शदाताओं से सलाह लेनी चाहिए। [4]इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर की आज्ञाएं मानने से दम्पत्ति को कोई दिक्कत नहीं आएगी। [5]विशेषकर 2 शमुएल 12:11, 12 और इस्राएल का अगला इतिहास।